अध्याय–1

अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास

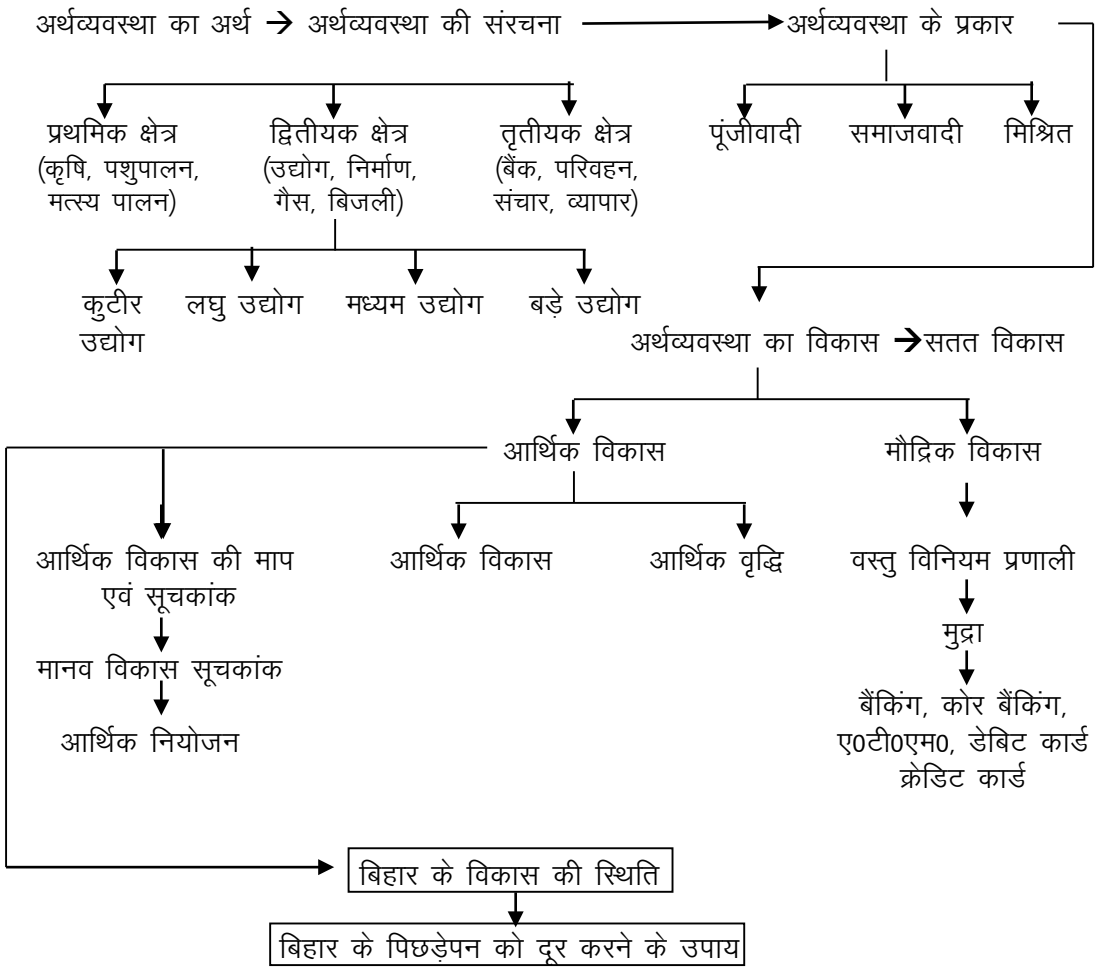

अर्थव्यवस्था का अर्थ :

अर्थव्यवस्था समाज की सभी आर्थिक क्रियाओं का योग है।

हमारी वे सभी क्रियाएँ, जिनसे हमें आय प्राप्त होती है, आर्थिक क्रिया कहलाती हैं। जैसे – कृषि एक आर्थिक क्रिया है, जिससे हमें आय की प्राप्ति होती है।

अर्थव्यवस्था का अर्थ संपूर्ण आर्थिक क्रियाओं के अध्ययन से है, जिसमें मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए संसाधनों का प्रयोग किया जाता है।

अर्थव्यवस्था की संरचना :

उत्पादन के आधार पर अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में विभक्त किया जाता है :

1. **प्राथमिक क्षेत्र**
    - जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं तो वह प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
    - अधिकांश प्राकृतिक उत्पाद हम कृषि, डेयरी (पशुपालन), मत्स्य और वनों से प्राप्त करते हैं, अतः इसे कृषि क्षेत्र एवं सहायक क्षेत्र भी कहते हैं।

2. **द्वितीयक क्षेत्र**
    - यहाँ वस्तुएँ सीधे प्रकृति से उत्पादित नहीं होती हैं, बल्कि उनके माध्यम से निर्मित की जाती है।
    - निर्माण की यह प्रक्रिया घर, कार्यशाला, अथवा कारखानों में होती है। अतः इसे औद्योगिक क्षेत्र भी कहते हैं।
    - औद्योगिक क्षेत्र के अंतर्गत कुटीर, लघु, मध्यम एवं बड़े उद्योग शामिल किये जाते हैं।

3. **तृतीयक क्षेत्र**
    - यह क्षेत्र वस्तुओं का उत्पादन नहीं, बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्र का सहयोग करती है।
    - इसके अंतर्गत बैंक, परिवहन (आवागमन के साधन), संचार, व्यापार तथा अन्य सेवाएँ आती हैं। अतः इसे सेवा क्षेत्र भी कहते हैं।

अर्थव्यवस्था के प्रकार :

- उत्पादन के साधनों के स्वामित्व (मालिकाना हक) के आधार पर पूरे विश्व में तीन प्रकार की अर्थव्यवस्था पाई जाती है।
- (उत्पादन के साधन – भूमि, श्रम, पूंजी, संगठन एवं साहस)
- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था – उत्पादन के साधनों का स्वामित्व निजी व्यक्तियों के पास होता है। जिसका प्रयोग वे निजी लाभ के लिए करते हैं। अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पाई जाती है।
- समाजवादी अर्थव्यवस्था – उत्पादन के साधनों का स्वामित्व देश की सरकार के पास होता है। जिसका प्रयोग समाज के लाभ के लिए किया जाता है।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था – उत्पादन के साधनों का स्वामित्व सरकार तथा निजी व्यक्तियों के पास होती है। यह व्यवस्था पूंजीवादी तथा समाजवादी व्यवस्था का मिश्रण है।

अर्थव्यवस्था का विकास :

आर्थिक विकास का मुख्य उद्धेश्य अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्र अर्थात् प्राथमिक द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रों में उत्पादन का स्तर ऊँचा करना है। आर्थिक विकास तथा आर्थिक वृद्धि में अर्थशास्त्रियों ने अंतर बताया है।

आर्थिक विकास	आर्थिक वृद्धि
• आर्थिक विकास विकसित देशों के विकास से संबंधित अवधारणा है। • आर्थिक विकास में आकस्मिक तथा रूक–रूक कर परिवर्त्तन आते हैं। • आर्थिक विकास के अंतर्गत उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ तकनीकी और संस्थागत परिवर्त्तन होता है।	• आर्थिक वृद्धि विकासशील देशों के विकास संबंधित अवधारणा है। • आर्थिक वृद्धि एक क्रमिक दीर्घकाल में स्थिर प्रक्रिया है। • आर्थिक वृद्धि के अंतर्गत उत्पादकता में वृद्धि होती है।

मौद्रिक विकास :

- मौद्रिक विकास के अंतर्गत मुद्रा के आगमन से आधुनिक मुद्रा के प्रचलन तक के काल को शामिल करते हैं।
- मुद्रा के आगमन से पूर्व वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रचलन था।
- वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तु ही मुद्रा के रूप में कार्य करता था और एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु दी जाती थी।
- आधुनिक समय में प्लास्टिक मुद्रा जैसे ए0 टी0 एम0 एवं क्रेडिट कार्ड का प्रचलन है।
- ATM — Automated Teller Machine
- जब एक व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना विलंब के बैंक के माध्यम से लेन–देन करता है तो बैंक के इस प्रणाली को 'कोर बैंकिंग प्रणाली' कहते हैं।

आर्थिक विकास की माप एवं सूचकांक :

- **राष्ट्रीय आय :** किसी देश में एक वर्ष की अवधि में उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय कहा जाता है।
- **प्रति व्यक्ति आय :** राष्ट्रीय आय को देश की कुल जनसंख्या से भाग देने पर जो भागफल आता है, वह प्रति व्यक्ति आय कहलाता है। प्रति व्यक्ति आय = राष्ट्रीय आय / कुल जनसंख्या।
- **मानव विकास सूचकांक (Human Development Index)**
- UNDP – United Nations Development Programme
- HDR – Human Development Reprort

- मानव विकास सूचकांक में विभिन्न देशों की तुलना लोगों के शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य स्थिति और प्रति व्यक्ति आय के आधार पर की जाती है। HDI = जीवन आशा सूचकांक + शिक्षा प्राप्ति सूचकांक + जीवन स्तर सूचकांक का औसत। HDI तीनों सूचकांकों का औसत होता है। पैमाने पर सभी देशों की HDI दर शून्य से एक होती है।

आर्थिक नियोजन :

- राष्ट्र की प्राथमिकताओं के आधार पर एक निश्चित अवधि के अंतर्गत उपलब्ध संसाधनों का विकास हेतु प्रयोग करना ही आर्थिक नियोजन है।
- इन योजनाओं का प्रारूप योजना आयोग द्वारा तैयार किया जाता है।
- योजना आयोग की स्थापना 1950 में हुई थी।
- भारत के प्रधानमंत्री योजना आयोग के पदेन अध्यक्ष होते हैं।
- नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है, जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है।
- NITI – National Institute for Transforming India (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान)
- राष्ट्रीय विकास परिषद् (National Development Council NDC) – NDC का गठन 6 अगस्त 1952 को किया गया था। आर्थिक नियोजन हेतु राज्य सरकारों तथा योजना आयोग के बीच तालमेल तथा सहयोग का वातावरण बनाने के लिए इसका गठन किया गया था। सभी राज्यों के मुख्यमंत्री इसके पदेन सदस्य होते है।

आधारिक संरचना :

- वे सभी तत्व जैसे, बिजली, परिवहन, संचार, बैंकिंग, स्कूल, कॉलेज अस्पताल आदि जो देश के आर्थिक विकास का आधार है, आधारिक संरचना कहलाते हैं।

बिहार के विकास की स्थिति :

आधारिक संरचना के विकास की दृष्टि से बिहार अन्य विकसित राज्यों की तुलना में बहुत पीछे है। यहाँ की आर्थिक और सामाजिक संरचनाएँ दोनों ही बहुत कमजोर एवं निम्न स्तर की हैं, जिसके पिछड़ेपन के निम्नांकित कारण हैं :

(i) तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या
(ii) आधारिक संरचना का अभाव
(iii) कृषि पर निर्भरता
(iv) बाढ़ तथा सूखा से क्षति
(v) औद्योगिक पिछड़ापन
(vi) गरीबी
(vii) खराब विधि व्यवस्था
(viii) कुशल प्रशासन का अभाव

बिहार के पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय :

- जनसंख्या पर नियंत्रण
- कृषि का तेजी से विकास
- बाढ़ पर नियंत्रण
- आधारिक संरचना का विकास
- उद्योगों का विकास
- गरीबी दूर करना
- शांति व्यवस्था की स्थापना
- स्वच्छ तथा ईमानदार प्रशासन
- केन्द्र से अधिक मात्रा में संसाधनों का हस्तांतरण
- बिहार के प्राकृतिक संसाधन तथा कर्मठ मानव संसाधन के योगदान से बिहार की कृषि एवं कृषि जन्य उद्योगों के विकास से राज्य एवं भारत देश का विकास संभव हो सकता है।

सतत् विकास :

विकास की वह प्रक्रिया, जिसमें वर्त्तमान की आवश्यकताएँ बिना भावी पीढ़ी की क्षमता, योग्यताओं से समझौता किये पूरी की जाती है।

समावेशी विकास (Inclusive growth) :

आर्थिक विकास की जिस प्रक्रिया से समाज के सभी वर्णों का जीवन–स्तर ऊँचा होता जाए तथा समाज का कोई भी वर्ग विकास के लाभ से अछूता नहीं रहे तो ऐसे ही विकास की क्रिया को समावेशी (Inclusive growth) कहा जाता है।

◆◆◆